स्नेहलीला

अर्थात्

श्रीउद्धवजी का बृज में जाना और नन्द यशोदा तथा गोपिकाओं के प्रति श्री आनन्दकन्द कृष्णचन्द्र का संदेसा कहना और उनलोगों का अपूर्व प्रेमवर्णन ।

(ग्रन्थकार का नाम नहीं मिला)

जिसे यह पुस्तक लेना हो काशी भारत-जीवनसम्पादक बाबू रामकृष्णवर्म्मा को पत्र लिखे ।

काशी

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुई ।

सम्बत् १९४९ ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य /)